प्रेम प्रतीतिहि कपि भजे,सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल सुभ,सिद्ध करैं हनुमान ॥
जय हनुमंत संत हितकारी । सुन लीजै प्रभु अरज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै । आतुर दौरि महा सुख दीजै ॥
जैसे कूदि सुन्धु वहि पारा । सुरसा बद पैठि विस्तारा ॥
आगे जाई लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा । सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजारी सिंधु महं बोरा । अति आतुर जमकातर तोरा ॥
अक्षय कुमार मारि संहारा । लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर में भई ॥
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी । कृपा करहु उन अन्तर्यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होय दुख हरहु निपाता ॥
जै गिरिधर जै जै सुखसागर । सुर समूह समरथ भटनागर ॥
जय हनु हनु हनुमंत हठीले । बैरिहि मारु बज्र की कीले ॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ॥
ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो । बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा । ॐ हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि शपथ पाय के । रामदूत धरु मारु जाय के ॥
जय जय जय हनुमंत अगाधा । दुःख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा । नहिं जानत हौं दास तुम्हारा ॥
वन उपवन, मग गिरि गृह माहीं । तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पांय परों कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ॥
जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन वीर हनुमंता ॥
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रति पालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बेताल काल मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहिं शपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ॥
जनकसुता हरि दास कहावौ । ताकी शपथ विलम्ब न लावो ॥
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥
चरण शरण कर जोरि मनावौ । यहि अवसर अब केहि गौहरावौं ॥
उठु उठु उठु चलु राम दुहाई । पांय परों कर ज़ोरि मनाई ॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनुमंता ॥
ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल । ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनन्द हमारो ॥
यह बजरंग बाण जेहि मारै । ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥
पाठ करै बजरंग बाण की । हनुमत रक्षा करैं प्राण की ॥
यह बजरंग बाण जो जापै । ताते भूत प्रेत सब कांपै ॥
धूप देय अरु जपै हमेशा । ताके तन नहिं रहै कलेशा ॥